Global Journal of Multidisciplinary Studies Available online at www.gjms.co.in
Volume 2, Issue2, January 2014
ISSN: - 2348-0459

''एहसास–ए–जिन्दगी (काव्य व गज़ल संग्रह) में प्रस्तुत समय और समाज सापेक्ष चिंतन''

गोपाल लाल मीणा
सहायक प्रोफेसर(हिन्दी) स्वामी श्रद्धानन्द महाविद्यालय
(दिल्ली विश्वविद्यालय) अलीपुर, दिल्ली–36.

अभी हाल ही में नवोदित और उभरते कवि ह्रदय रामप्रीत 'आनन्द' का काव्य एंव गज़ल संग्रह पढ़नें का अवसर प्राप्त हुआ। जो बाबा पब्लिकेशन, जयपुर से 2013 में प्रकाशित है। इस रचना में कुछ कविताएँ,कुछ गज़ले और नगमों को सिलसिलेवार माला के मणिकों की तरह पिरोनें का काम 'आनन्द' नें किया है। जिनके माध्यम से 'आनन्द' के कवि ह्रदय की विशालता का ही परिचय नहीं मिलता अपितु उनके मुखर, यशस्वी, समर्पित और भाव प्रवणता का परिचय मिलता है। कवि 'आनन्द' ने वैसे तो भारतीय समाज के लगभग सभी पक्षों को छूनें और व्यक्त करनें का प्रयास किया है। जिसमें कवि 'आनन्द' की बहुआयामी सोच और दृष्टि का परिचय यह रचना अपनें पाठकों से कराती है। इस रचना को पढ़ते समय कभी कवि ह्रदय की विशालता और परिपक्वता का परिचय होता है, तो कभी प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता का। कभी कवि 'आनन्द' अपने देश के प्रति समर्पित दिखाई देते है। कभी राष्ट्रीय भावनाओं के प्रति मुखर होते है। कभी प्रेम का आकर्षण और कभी विकर्षण पर ह्रदय की टसक और कसक दिखाई देती है। कभी राजनीति को कोसते दिखाई देते है तो कभी इंसानी फितरतों को व्यक्त करते मिलते है। जो भी हो रचनापाठ से गुजरते हुए कवि मन के विभिन्न भाव पक्षों का परिचय जरूर पाठकों होता है। कई बार तो वे समाज सुधारक और शिक्षक के रूप में तो कभी परिपक्व नेता के रूप में उद्बोध नही कवि 'आनन्द' नहीं करते बल्कि सीधा सामनें पड़नें वालों को फटकार भी लगाते हुए दिखाई देते है। यह तो पूरी तरह नहीं कहा जा सकता है, लेकिन फिर भी रचनाओं से परिचय होता है कि शायद यह कवि का अपना भोगा हुआ यर्थाथ है। ऐसा सुधि पाठकों के मन में विचार आना स्वाभाविक है। एक परिपक्व उद्बोधक का दायित्व कवि 'आनन्द' अच्छी तरह समझते है और अपनी रचना की शुरूआत जगत जननी वसुधंरा और ''धरती'' माँ की वंदना से करते हुए कहते है–

''तुझे कोटि–कोटि नमन ऐ धरती! माँ
समान,
तेरी गोद में पलकर हर मनुज हुआ
शक्तिमान।''

धरती माँ की वन्दना करते हुए कवि एक बार अपनें प्रेरणादायी महापुरूषों का नमन और स्मरण करना नहीं भूलता और उसके बिना अपनी रचनाधर्मिता का संपूर्ण होना अपूर्ण सा ही लगता है। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए कवि 'आनन्द' ने भारत रत्न और राष्ट्र निर्माता, युग प्रवर्तक बाबा साहब अम्बेड़कर को स्मरण करते हुए उनके योगदान को नतमस्तक होकर स्वीकार किया है। उनके राष्ट्र निर्माण और समाज सुधार आदि का वर्णन करते हुए अपनी कविता 'दलित मसीहा' में उन्होंने इस पर कहा है–

''शिक्षित, संगठित और संघर्ष करनें का संदेश
दिए, दलित, पिछड़े, महिलाओं को आदर का
उपदेश दिए, चलके सच की राहों पर वे रौशन
अपना नाम किए वतन को नई दिशा के लिए
संविधान साभार दिए।''

इतना ही नहीं वे उनके योगदान को अविस्मरणीय और अप्रतिम मानते है। इस पर उन्होंने कहा है कि–

''बाबा साहब के लेखन से सबका उद्धार हो
गया,
आजादी से पहले का भार, अब आभार हो
गया।''

बाबा साहब के किए गए कामों के प्रति कवि अपना आभार इस कविता के माध्यम से करते है। यही नहीं कवि मन में कहीं आधुनिक भारत के निर्माता चाचा नेहरू के प्रति भी अपार श्रद्धा है। जो मेरी समझ से विद्यालय में मनाए जाने वाले बाल दिवस के अवसर पर प्रस्तुत करने के लिए 13.11.10

को लिखी गई है। उस पर उनकी एक पंक्ति कविता 'चाचा नेहरू' से इस प्रकार है–

''बाल मानस पै जिनका रहा भरोसा
सदा,
ऐसे मानस में बैठे रसखान चाचा
नेहरू,।''

इस काव्य संग्रह में कवि 'आनन्द' की रचनाशीलता का परिचय इस प्रकार होता है, इसका प्रमाण यह है कि कवि 'आनन्द ने अपनी कलम को भारत में मनाएँ जाने वाले हर एक पर्व और उत्सव पर रचनाधर्म से जोड़ा है। विभिन्न मौके और अवसर पर कवि मन में होने वाली हलचल और भाव प्रवणता का परिचय इससे अपने आप मिल जाता है। कवि 'आनन्द' की कलम से ऐसा कोई अवसर अछूता नहीं रह पाया है। इससे कवि मन में बैठी सामाजिकता का सायास परिचय हो ही जाता है। कविता 'खेल' में खिलाड़ियों में खेल भावना का
रूझान विकसित करने हेतु वे कहते है–

''खेल को आप खेल–भावना से
खेलिए, संकुल पै हो या आप राष्ट्र पै
खेलिए, हर जगह भाईचारे की बस
नीयत रहे,
इक–दूजे के साथ बड़े प्यार से खेलिए!''

कविता 'बसंत' मे कवि मन कह उठता है
कि–

''कल तलक हवाएँ भी चलती थीं सिसकियॉ
लेकर, आज उनकी सरसराहटों में भी अफसाना
हो गया, चॉद भी मुस्कराता है अक्सर अपनी
चॉदनी देकर आज उसका मुस्कराना भी इक
तराना हो गया।''

कवि 'आनन्द' ने आज के इस युग में मूल्यविहीन हो चुकी राजनीति पर भी विचार किया है और आज की राजनीति और नेताओं के चरित्र को 'आज का नेता' कविता के द्वारा समझनें समझानें का प्रयास कुछ इस तरह किया है–

'भला चिकित्सक स्वास्थ्य देखता,
उन्हें विधायक मार ड़ालता,
परिजन उनके थाने जाते,
वहॉ पर नेता रोब जमाता हुई दीवानी

पर जज खरीदता,

धाक जमाके रिहा हो जाता।''

इस प्रकार आज के इस युग में चारों और महिलाओं के प्रति अत्याचार और बलात्कारों को देखकर 'आनन्द' का हृदय हाहाकार कर उठता है और वे अपनी कविता 'बहू बेटियॉ' में कह उठते है–

'कब तक होती रहेंगी कत्लेआम बहू बेटियॉ''

एक गज़ल में राजनेताओं के चरित्र और उनके छल फरेब को चुनावों के दौरान किए जाने वाले आचरण और

व्यवहार को कुछ इस तरह व्यक्त किया है–

'उनके जादू का मन्जर भोली जनता बनीं,

दॉव से उन्हें अब लुभानें के दिन आगए,

हमनें ए कर दिया हमने वो कर दिया,

बात ए सब अब बताने के दिन आ गए।''

०००

आज खरीद फरोख्त करने के कारण मानव मूल्यों का पतन चारों और देखने को मिल जाता है और इसको देखकर कवि 'आनन्द का मन हुंकार कर कह उठता है–

''शरीफ हैं नहीं वो, मगर शराफत खरीद लेते है,

दौलत के दम पै हर खिलाफत खरीद लेते है, खुदा की रहमत से जो जीते हैं यूँ ही जिन्दगी, फैलाके दहशत वो हर हिफाज़त खरीद लेते है।''

भ्रष्टाचार को शिष्टाचार बनाने में भी लोग किस प्रकार हर–एक दॉव को अपने अनुकूल बनाते है। इस पर कवि 'आनन्द' अपनी एक गज़ल में कहते है–

''अपील जिनकी ख़ारिज होती है अदालतों में,

रिश्वत के दम पै हर ज़मानत खरीद लेते है।''

इंसान और इंसानियत को कवि 'आनन्द' कुछ इस प्रकार व्यक्त करते हुए कहते है कि जो लोग दूसरों के

हक और अधिकारों पर जीवन व्यतीत करते है। मूल्यों का पतनोन्मुखी वहीं देखा जा सकता है। सच को भी किस तरह से ऑच से गुजरना होता है हमारे समाज में इसको कवि ठीक से जानते है। इस पर यह गज़ल का अंश इस प्रकार है–

''फ़िज़ूल में बिता लेते है वक्त जिन्दगी का, मगर कहर ढ़ाते है हमेशा इंसानियत पै लोग। सोच बदलने की जो करते है कभी कोशिश, उन्हीं के खिलाफ साजिश सदा करते है लोग।''

इंसान और इंसानियत को लेकर बाते और केवल बाते करने वालों को तो कवि की दृष्टि ठीक से पहचान करती है और इसी को लेकर वे लिखते है–

''इंसान है मगर इंसानियत के नाज बहुत है, असल की जिन्दगी में उनके ब्याज बहुत है, वैसे तो हसीन बातों की देते है सदा तालीम,

मगर उनकी ही जिन्दगी के यूँ राज बहुत है।''

सभी तरफ और सभी प्रकार से आमूलचूल परिवर्तन की आकांक्षा कवि 'आनन्द' के मन में हिलोर लेती है।

वे चाहतें है कि जो स्थिति, परिस्थिति वर्तमान में है वह संतोषजनक नहीं है। उन सब में परिवर्तन होना चाहिए। इसके लिए स्वयं कमर कसकर इसके लिए साथ देने का आह्वान करते हुए कहते है–

''यह दुनियॉ ऐसे ही रहेगी हम बदलते रहेंगे,

जब तक है जिन्दगी तब तक यूँ चलते रहेंगे।''

काव्य रचनाशीलता और रचनाधर्म के प्रति समर्पित और आकर्षित लोगों की सोच और नजरिए को किस प्रकार

कवि 'आनन्द' व्यक्त करते है– ''अच्छी सोच से जो कवियों को देखने आते है, कभी फूल तो वो कभी पत्थर फेंकन आते है, तमाशा बनके जो अपना विचार परोसते है, तमाशबीन सिर्फ उनका तमाशा देखने आते है।''

काव्य रचना और रचनाधर्म पर लोगों की सोच की परख करते हुए कुछ महसूस किया है। कवि और सांसारिकता से उकताए लोगों की विचार साम्यता कहीं शायद कवि ने महसूस की होगी इसीलिए 'आनन्द' कहते है–

''घर के तनावों से जिन्हें आती नहीं है यूँ नींद, वे ही शख्स अक्सर कवियों को झेलने आते है।''

हमारे देश की राजनैतिक स्थिति और परिस्थितियों को कवि 'आनन्द' समझते है और इसकी जड़ में जाकर वर्तमान परिदृश्य में राजनीति में नेतृत्व शून्यता की स्थिति को इस प्रकार कहते है–

''हिन्दुस्तान है बेहतर, मगर नेता नहीं है।''

इसी गज़ल में वे आगे कहते है कि इस स्थिति में भारत की सम्पूर्ण जनता नेतृत्व शून्यता को महसूस करती है। यह गज़ल कवि ने 06.12.12 को लिखी है और कहा है कि–

''सहमी हुई है जनता औ सहमा हुआ वतन है,

करे भरोसा कैसे जनता, बेहतर नेता नहीं है।''

यहॉ तक कि कवि 'आनन्द' बेहतर स्वास्थ्य का राज अच्छी तरह पहचानते है और नौजवान साथियों के लिए संदेश देने की एक गज़ल के माध्यम से प्रातः काल में स्वास्थ्य की बेहतरी के लिए इस तरह कोशिश करते है–

''सुबह की हवा से बेहतर कोई दवा है नहीं,

लाख टके की हवा को मुफत् में पा लो यारों।

इंसानियत के निर्माण में आत्मसम्मान, स्वाभिमान, और आत्मअस्मिता की सुरक्षा और संरक्षण के लिए कवि 'आनन्द' क्या उपचार बताते है, इसको एक गज़ल के इस हिस्से से समझा जा सकता है। यही नहीं इनकी सुरक्षा का उपचार करते हुए मंत्र भी दे देते है। कुछ पंक्तियॉ इस प्रकार है–

''जिल्लत के बाजार में जो जन्नत तलाशते है,

बिना खिलाफत मर जाने का इशारा करती है।''

आगे इसी में कहते है कि खामोंशी से स्वीकार नहीं करना चाहिए बल्कि इसका प्रतिरोध भी करना चाहिए–

''खामोशी हर खुमारी मिटाने की हिम्मत रखती है, पस्त दिल को बुलन्द करनें का इशारा करती है, कसम खुदा की जो ड़ींग हॉकते रहते है हरदम, वक्त पै हथियार चलाने का इशारा करती है।''

कवि 'आनन्द' मानवी फितरतों को समझते है और इन इंसानी फितरती दुनियॉ को आड़े हाथों लेते हुए उनको सीधी चेतावनी भरे लहजे में कहते है–

''खुदा को भूलकर जो खुद, खुदा बने बैठे है,

कैदखाने में वो नया मेहमान दिया करते है।''

यहीं नहीं कवि 'आनन्द' को अपने वतन की चिन्ता है। और देश की चिंता करते हुए अपनी एक गज़ल के माध्यम से कहना चाहते है–

''वतन की आबरू अब महफूज नहीं कहीं पै,

....

''सच का मायने तो सिर्फ मंचों तक रह गये है, उन मंचों के भरोसे अपना वतन बिक गया है, तालीम तलब होती तलबगारों की महफिलों में, जिसे सरहदों पै बेचने की इकरार हो रही है।''

कवि 'आनन्द' को वर्तमान में हो रही सामयिक हलचलों की भी पूरी खबर रखी है। जिसमें दिल्ली में 'दामिनी' बलात्कार की घटना होने पर उनका मन हलचल कर उठता है और आन्दोलित जनसमूह के साथ मिलकर प्रभावित को न्यायिक हक की माँग ही नहीं करता बल्कि इस अमानवीय कृत्य पर कड़ी भर्तस्ना कर उठता है–

''दामिनी की दमक से पूरा हुजूम जुट गया,

दुशासनों के दमन का कफन बन गया।''

एक जगह कवि 'आनन्द' अपनी गज़ल के माध्यम से नैतिक रूप सें पतनोन्मुखी समाज को फटकारते हुए

कहा है कि–

''रचा के शादियॉ जो कई सालियॉ तलाशते है,

बाद में उन्हीं के ठिकाने कहीं और मिलते है।''

एक गज़ल में कवि 'आनन्द' का आशय मैं नहीं समझ पा रहा हूँ, मेरी राय में शायद शब्द बदलनें से मैं अर्थ को ठीक से पहचान सकता हूँ जो कभी बाद में कवि 'आनन्द' से का सौभाग्य होगा तो संशय दूर करने की कोशिश करूँगा। बहरहाल इस पद को मैं उसी रूप में प्रस्तुत करता हूँ। जो इस प्रकार है–

''हॅसीन पलों को जिन लोगों नें हॅसंके जिया है,

याद उनको ही हमेशा हर जमाने ने किया है।''

यहॉ हॅसीन की बजाय 'गमगीन' रखने से मेरा काम थोड़ा आसान हो जाता खैर कवि की अपनी सोच और

दृष्टि है। देश की चौकसी करने वाले चौकीदार ही महफूज नहीं उसकी चिंता करते हुए सामयिक घटना को आधार बनाकर कवि 'आनन्द' ने कहा है–

''सियासी जंग से जिन्दगी बर्बाद हो रही है,

बदन के होते हैं टुकड़े वतन के सरहदों पै।''

अन्त में वतन के ओहदेदारों को लताड़ते हुए कहा है कि अब वतन की पैरवी करने वाले नेता अपने कोई उसूल नहीं रखते । कैसे उसूल हो उस पर उनकी एक गज़ल इस प्रकार व्यक्त है–

''वतन के राजनेता सिर्फ पेट के पुजारी है, बोस के उसूल उन्हें बतानें की जरूरत है दोस्तो, लेकर तालीम इस मदरसे में बनेंगे चिराग आप, रोशनी दूर तक ले जाने की जरूरत है दोस्तो।''

बहुत प्यारा सा उद्बोधन कविमन 'आनन्द' ने किया है। जिन्दगी की कुछ धरातलीय सच्चाईयॉ है।उसमें भी कई तरह के लोग होते है जो समय की पहचान और परख करते है और अवसर को भुनाना और अवसर के अनुकूल बनना बनाना जानते है। जिन्हे इस प्रकार कवि ने प्रस्तुत किया है–

''जिन्दगी घरौंदों के नए अन्दाज का बड़ा इलाका है, जिस इलाके में हम गल्तियॉ हर बार किया करते है, आदमी कल्पना के सागर में लगाता रहता हे गोता, कुछ लोग डूबती नइया का बेड़ा पार किया करते है।''

वर्तमान समय में लोगों के द्वारा किया जाने वाला आम व्यवहार जो दिखाई देता है। जो सार्वभौम रूप में स्वीकार किया जा सकता है उस पर कवि 'आनन्द' इस प्रकार व्यक्त करते है–

''माहौल भॉपकर लोग अपना पैंतरा बदल लेते है, चौपाल के लिए महफिल का चबूतरा बदल लेते है, ख्याली हैसियत से जो लोगो पै राज करते है,

समाज के शूरमों में वो विराजमान हुआ करते है।''

आज के मानवीय मूल्यों में आए हुए बदलाव को कवि 'आनन्द' की कवि दृष्टि समझती है। और आज का मानव आज भीड़ और समूह में रहते हुए अपने आप को निरा तन्हा पाता है। इस पर कवि 'आनन्द' की कलम इस प्रकार चलती है–

''सड़के भरी हुई है मगर अकेला हर कोई है,

हर जगह ही हो रहा इस्तेमाल हर कोई है, मंच से मददगारों की सहानुभूति बहुत होती है, मगर उन्हीं के सामने बहुत नरसंहार हो रहा है।''

मानवीय संस्कार किस तरह समय और काल परिस्थिति की हवा पाकर बदल जाते है। उसी से मानव को एक नया सम्बल मिलता है और आशा की किरण भी। जिससे जीवन निराशा न होकर आशा से भर उठता है–

''वक्त के साथ सभी दिशाएँ बदल जाती है, आदमी के जीने की आशाएँ बदल जाती है, जन्म से आदमी अपनी भाषा ही सीखता है,

मगर शलीकों के साथ भाषाएँ बदल जाती है।''

आशा और निराशा से मायूशी छा जाने पर कवि 'आनन्द' ने काव्य संग्रह के अंन्त में अपने जीवन का मूल मंत्र और उससे प्रेरणा लेने का आह्वान भी किया है। और मानव जीवन को और आनन्दमयी बनाने के लिए अपना मंत्र कुछ इस प्रकार दिया है, जो निःसंदेह सभी के लिए प्रेरणादायी हो सकता है–

''हौसला बढ़ा देता हे, आसमॉ मेरा, हर तरफ अँधेरा है मगर सबेरा मेरा, जहॉ सम्भावनाएँ खत्म होने लगती है,

वहीं पै हर बार ही बँधा है शमॉ मेरा।

कवि ने मानव और मानवीय व्यवहार को अपनी काव्य कला के माध्यम से भरपूर सौन्दर्य से सुशोभित करने की कोशिश की है। जिसमें हर कविता को विचारबोध, भावबोध, मूल्यबोध और अनुभव की प्रभावोत्पादकता के साथ अभिव्यक्त किया है। कई कविताएँ और गज़ले इस मामले में अपने आप में विशिष्ट और अनोखी जान पड़ती है। कवि अपने समय के प्रभाव और दबाव दोनों को जानते, पहचानते ही नहीं बल्कि उसको अपनी कलम की धार से और प्रखर बनाते है। नवोदित कवि के द्वारा इतना अच्छा प्रयास भविष्य में प्रसिद्ध और श्रेष्ठ स्थापित कवियों की जमात में अग्रणी स्थान दिला सकता है। ऐसा मेरा विश्वास ही नहीं पूरा यकीन है। आशा है कवि महाशय हमें भविष्य में और भी अच्छी और श्रेष्ठ रचनाओं के साथ लाभान्वित करेगे।